IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्रुतियों एवं स्मृतियों में मानव कल्याण की भावना

डॉ. रामानन्द कुमार ''रमण''
संस्कृत
बी.एन.एम.यू. मधेपुरा
बिहार

शोध–सारांष

आज मानव का जीवन भौतिक सुख–सुविधाओं एवं समृद्धि से युक्त हो गया है। आधुनिक जीवन शैली पर भोगवाद प्रधान प्रवृत्ति का स्वामित्व दिखाई देता है। मानव धनार्जन की अंधाधुंध दौड़ के कारण उचित–अनुचित का अन्तर नहीं कर पा रहा है। इन सबका कारण जमाखोरी मुनाफाखोरी, कालाबाजारी तथा अर्थलोलुपता है। सर्वत्र आपाधापी लूट–खसोट, मारा–मारी एवं अपसंस्कृति का प्रभाव है। परिणामस्वरूप मानव के बीच सौहार्द की भावना लुप्त हो रही है। इन परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति का आधारभूत वैदिक बाङ्मय हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है। क्योंकि मानव जाति के कल्याण के लिए उत्कृष्ट आचार संहिता हमें श्रुतियों और स्मृतियों से ही प्राप्त हो सकती है। हमारा सम्पूर्ण वैदिक दर्शन मानव कल्याण की अवधारण का न केवल आदि सर्जक एवं उद्भावक है, अपितु मानवता वादी विचारों का पोषक एवं संबर्द्धक भी है।

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही मानव कल्याण पर आधारित रही है। हमारे ऋषियों–महर्षियों की चिन्तन परम्परा राष्ट्र की सुदृढ़ समृद्धि और लोक कल्याणकारी व्यवस्था के प्रति सदैव गंभीर रही है। वे मानव को अनासक्त भाव से जीवन–यापन का उपदेश देते हैं। वैदिक प्रार्थना एवं मन्त्र, सेवा, सम्मान, समर्पण, समत्व, ममत्व और विश्व बन्धुत्व आदि भावों को व्यक्त करते हैं, किन्तु ये हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने जिन मानव मूल्यों को अपनाकर हमारा मार्ग दर्शन किया था, वर्त्तमान पीढ़ी उन्हीं जीवन मूल्यों की नितान्त अपेक्षा कर रही है। नैतिकता एवं उसके सम्बर्द्धक तत्त्वों का निरंतर ह्रास हो रहा है। सर्वत्र आपा–धापी, लूट–खसोट एवं अपसंस्कृति का प्रभाव है। परिणामस्वरूप मानव के बीच सौहार्द की भावना लूप्त हो रही है। इन परिस्थितियों में भारतीय–संस्कृति का आधारभूत वैदिक वाङ्मय श्रुतियाँ एवं स्मृतियाँ महारा मार्ग दर्शन कर सकता है। क्योंकि मानव जाति के कल्याण के लिए उत्कृष्ट आचार–संहिता हमें वेदों एवं स्मृतियों से ही प्राप्त हो सकती है। हमारा सम्पूर्ण वैदिक दर्शन मानव–कल्याण की अवधारणा का न केवल आदि सर्जक एवं

उद्भावक है अपितु मानवतावादी विचारों का पोषक एवं संबर्द्धक भी है। आज विश्व में कहीं धर्म के नाम पर तो कहीं वर्ण, जाति एवं भाषा के आधार पर हिंसा एवं प्रतिहिंसा हो रही है। मनुष्य ईर्ष्या, द्वेष, भय, कलह, असुरक्षा तथा अकेलेपन के दंश को झेल रहा है। इन परिस्थितियों में मानव जीवन को स्वस्थ दिशा देते हुए ऋवेद में कहा गया है–

''सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम।
देवभागं यथा पूर्वे सं जनाना उपासते।
समानी व आकृतिः समाना हृदयानि व।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति।।''[1]

इन मंत्रों से प्रेरणा प्राप्त करके मनुष्य परस्पर सौहार्द, एकता, सहयोग तथा सद्भाव के द्वारा जीवन को आनन्दमय बना सकते हैं। भारत वर्ष में विभिन्न सम्प्रदायों के लोग रहते हैं, जिनकी रहन–सहन, वेश–भूषा, जीवन–पद्धति, धार्मिक विश्वास तथा रीति–रिवाज, खान–पान, पृथक–पृथक् है। हमारे समाज के विभिन्न धर्मावलम्बियों एवं भाषा–भाषियों के मध्य असहिष्णुता निरंतर बढ़ती जा रही है किन्तु अथर्ववेद सभी सम्प्रदायों को एक साथ रहने की बात कहती है, जिसका अनुकरण करके हम पारस्पारिक सौहार्द एवं प्रेम की भावना से मिलकर एक स्थान पर रहते हुए स्वयं का एवं समाज का कल्याण कर सकते हैं।

''जन विभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथ्वी यथौकसम्।
सहस्रधारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरेनपस्फुरन्ती।।''[2]

आज मानव का जीवन भौतिक सुख–सुविधाओं एवं समृद्धि से युक्त हो गया हे। आधुनिक जीवन शैली पर भोगवाद प्रधान प्रवृत्ति का स्वामित्व दिखायी देता है। मानव धनार्जन की अंधाधुंध दौड़ के कारण उचित–अनुचित का अन्तर नहीं कर पा रहा है। नकली दवाई और मिलावटी भोजन सामग्री से मरने की घटना आम बात हो गई है। इन सबका कारण जमाखोरी, मुनाफा खोरी, काला बाजारी तथा अर्थ लोलुपता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में वैदिक वाङ्मय श्रुतियों और स्मृतियों के बताये रास्ते पर चलकर हम मानव कल्याण की भावना पर अग्रसर हो सकते हैं। क्योंकि वैदिक ऋषियों की प्रार्थना व्यक्तिगत न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए होती थी। वे सभी प्राणियों को अपनी आत्मा में देखते थे तथा किसी से घृणा नहीं करते थे–

''यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्ने वानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।''

आज विश्व की तस्वीर दिन–प्रतिदिन परिवर्तित हो रही हैं, उसे मनुष्य अपना विकास तो कह सकता है किन्तु इस सत्य को भी नहीं नकारा जा सकता है कि विकास से भी ज्यादा गति से उसका नैतिक पतन हो रहा है। आज के दौर में मनुष्य इतना गतिशील है कि वह इस गति की प्राप्रि के लिए क्या–क्या कार्य कर रहा है इसका तनिक भी अंदाजा नहीं है, वह तो बस इतना जानता है कि दुनियाँ में अगर रहना है तो सत्य की तथा अपनी नैतिकता को रौंदते हुए आगे भागते रहना है। मानव आज सत्यता से विमुख हो गया है जबकि सत्य के मार्ग व्यक्ति, परिवार तथा समाज के लिए उपादेय है व मानवीय विश्वास का आधार है इसलिए स्वयं तथा समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सत्य पर आधारित जीवन जीना चाहिए। सत्य की इसी महत्ता को प्रकाशित करते हुए ''मुण्डकोपनिषद'' में कहा गया है–

''सत्यमेव जयते नाऽनृतं सत्येन पन्था विवतो देवयानः।
योनाऽऽक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत् सत्यस्य परम् निधानम्।।[3]

आज पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति हमारी अस्मिता पर प्रहार कर रहे हैं। पश्चिम की नकल एवं हीन भावना के कारण हम अपनी संस्कृति को भूलकर पश्चिम के रंग में रंगते जा रहे हैं।

वेद में कहीं भी इतिहास नहीं है और न ही किसी मजहब या सम्प्रदाय की बात कही गई है। वेद में केवल संसार के अभ्युदय हेतु ज्ञान –कर्म व उपासना की बात कही गई हैं, क्योंकि वेद किसी पुरूष की रचना न होकर एक विशुद्ध ईश्वरीय ज्ञान है। हमारे महान् युगद्रष्टा एवं श्रष्टा महर्षि मनु ने भी ''मनुस्मृति'' में कहे हैं कि सम्पूर्ण भूमण्डल के राजा आर्यावर्त्त से ही यह अमूल्य ज्ञान प्राप्त करें–

''एतद्वैश प्रसूतत्रं सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्व मानवाः।।''[4]

स्मृतियाँ भारतीय अस्मिता की द्वार है और समस्त मानव जाति के लौकिक एवं अलौकिक चिन्तन का आधार भी है। स्मृतियाँ श्रुतिमूला है और श्रुतियाँ अपौरूषेय है। संसार में धर्म के बिना धर्मों की कल्पना असंभव है, किन्तु धर्म का आदेश श्रुतियाँ एवं स्मृतियाँ हीं देती हैं। धर्म के निर्धारण में वे ही प्रमाण हैं यह तो सर्वविदित है कि प्रमेय की सिद्धि प्रमाण से होती है, क्योंकि ''प्रमेयसिद्धिप्रमाणाद्धि।''यही कारण है कि धर्म की जिज्ञासा रखने वाले श्रुतियों एवं स्मृतियों को प्रमाण मानते हैं। ''मनुस्मृति'' में कहा गया है–

''वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विराम।
आचारश्चैव साधूनामात्मस्तुष्टिरेव च।।''[5]

हमारे महान् ऋषि पराशर मुनि ने भी ''पराशर स्मृति'' में कहे हैं,

''अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापर युगे।
अन्ये कलियुगे पुंसां युगरूपानुसारतः।।''[6]

अतः स्पष्ट है कि वर्त्तमान समय में आतंकवाद, भ्रष्टाचार, हिंसा, जातिवाद, भाषावाद व क्षेत्रवाद आदि की विभीषिका से जो हमारा समाज व देश आहत हो रहा है, उस सब के निदान के लिए श्रुतियाँ एवं स्मृतियाँ पूर्ण रूप से सक्षम एवं समर्थ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. ऋग्वेद –10, 191, 2 4
2. अथर्ववेद– 12. 1. 45
3. मुण्डकोपनिष्द–3.1.6
4. मनुस्मृति–2.10
5. मनुस्मृति–2
6. पराशर स्मृति–प्रथमोऽध्यायः, श्लोक सं०22